B.A. Part one
Paper Ist

by :-
Dr. Shailesh Kumar
dept. of economics
Raja Singh college Siwan

## पूर्ण प्रतियोगिता के अन्तर्गत कीमत निर्धारण :-
(Pricing under perfect competition)

यह परम्परा रही है कि बाजार में सौदा करने वाले दो पार्टियाँ होती है– एक क्रेता और दूसरा विक्रेता। इन दोनों पार्टियों में समझौता होने पर ही किसी वस्तु को बेची या खरीदी जाती है। इस प्रकार वस्तु की कीमत निर्धारण पर क्रेता और विक्रेता दोनों का प्रभाव होता है।

क्रेता पर माँग का नियम लागू होता है जिसके अनुसार कीमत बढ़ने पर माँग कम हो जाती है। और कीमत कम होने पर माँग बढ़ जाती है। पूर्ति की ओर पूर्ति का नियम लागू होता है, जिसके अनुसार कीमत बढ़ने पर पूर्ति में वृद्धि होती है और कीमत कम होने पर वस्तु की कीमत घट जाती है। हम सामान्यतौर पर यह भी कह सकते हैं कि माँग और पूर्ति दो विरोधी शक्तियाँ हैं, जो एक दूसरे के विपरित चलती है। जहाँ वे एक दूसरे के बराबर होती है वहीं कीमत निर्धारित होती है। और उस कीमत को संतुलन कीमत कहते हैं। इस कीमत पर बेची और खरीदी गई मात्रा को संतुलन मात्रा कहते हैं। जब कीमत संतुलन कीमत से कम या ज्यादा हो जाता है तो संतुलन उत्पादन में विचलन हो जाता है। जिससे अन्ततः फिर संतुलन कीमत स्थापित हो जाता है। इसे हम आगे तालिका के माध्यम से समझेंगे।

इस तालिका में सेब की माँग और पूर्ति अनुसूचि व्यक्त की गई है। जब सेबों की कीमत 10 रुपया प्रति किलोग्राम होती है तो मार्केट में सेबों की माँग 120 किलोग्राम...

P.T.O.

Scanned by CamScanner

B.A. Part one
Paper Ist

by :-
Dr. Shailesh Kumar
dept. of economics
Raja Singh college Siwan

## पूर्ण प्रतियोगिता के अन्तर्गत कीमत निर्धारण :-
## (Pricing under perfect competition)

यह परम्परा रही है कि बाजार में सौदा करने वाले दो पार्टियाँ होती है – एक क्रेता और दुसरा विक्रेता। इन दोनों पार्टियों में समझौता होने पर ही किसी वस्तु को बेची या खरीदी जाती है। इस प्रकार वस्तु की कीमत निर्धारण पर क्रेता और विक्रेता दोनों का प्रभाव होता है।

क्रेता पर माँग का नियम लागू होता है जिसके अनुसार, कीमत बढ़ने पर माँग कम हो जाती है। और कीमत कम होने पर माँग बढ़ जाती है। पूर्ति की ओर पूर्ति का नियम लागू होता है, जिसके अनुसार कीमत बढ़ने पर पूर्ति में वृद्धि होती है और कीमत कम होने पर वस्तु की कीमत घट जाती है। हम साफ तौर पर यह भी कह सकते हैं कि माँग और पूर्ति दो विरोधी शक्तियाँ हैं, जो एक दुसरे के विपरित चलती है। जहाँ वे एक दुसरे के बराबर होती है वहीं कीमत निर्धारित होती है। और उस कीमत को संतुलन कीमत कहते हैं। उस कीमत पर बेची और खरीदी गई मात्रा को संतुलन मात्रा कहते हैं। जब कीमत संतुलन कीमत से कम या ज्यादा हो जाता है तो संतुलन उत्पादन में विचलन हो जाता है। जिससे अन्ततः फिर संतुलन कीमत स्थापित हो जाता है। इसे हम आगे तालिका के माध्यम से समझेंगे।

इस तालिका में सेव की माँग और पूर्ति अनुसूचि व्यक्त की गई है। जब सेवों की कीमत 10 रुपया प्रति किलोग्राम होती है तो मार्केट में सेवों की माँग 120 किलोग्राम तथा

P.T.O.

Scanned by CamScanner

पूर्ति 20 कि० ग्राम है।

## माँग-पूर्ति अनुसूची

तालिका I

| कीमत (रुपये) (Price in rupees) | माँग की मात्रा (quantity demand) | पूर्ति की मात्रा Quantity Supplied) |
|---|---|---|
| 10 | 120 | 20 |
| 20 | 100 | 30 |
| 30 | 80 | 45 |
| संतुलन कीमत → 40 | 60 | 60 ← संतुलन मात्रा |
| 50 | 40 | 80 |
| 60 | 20 | 120 |

कीमत बढ़ने से माँग कम हो जाती है तथा पूर्ति बढ़ती जाती है, जब कीमत 40 रुपये प्रति किलो ग्राम होती है तो माँग एवं पूर्ति दोनों 60 कि० ग्रा० होती है, यही संतुलन मात्रा है और 40 रु० संतुलन कीमत को निर्धारित करती है। एक बार संतुलन कीमत स्थापित हो जाने से उसमें परिवर्तन की कोई प्रवृत्ति नहीं पाई जाती है। यदि इस समय कीमत 40 रुपये से अधिक या कम हो जाती है, तो माँग एवं पूर्ति की शक्तियाँ इसे पुनः 40 रुपये पर ले आएगी। उदाहरणार्थ यदि कीमत 40 रुपये से कम होकर 30 रुपये हो जाती है, तो माँग बढ़कर 80 कि० ग्रा० और पूर्ति कम होकर 45 कि० ग्रा० हो जाती है, सेवों की थोड़ी मात्रा के लिए अधिक माँग होने से क्रेताओं में प्रतियोगिता के कारण कीमत बढ़कर 40 रुपये हो जाती है। इससे माँग कम होकर 60 कि० ग्राम तथा पूर्ति भी बढ़कर 60 कि० ग्रा० हो जाती है। इस प्रकार संतुलन कीमत पुनः स्थापित हो जाती है। इसके विपरीत कीमत 50 रुपये होने पर माँग 40 कि० ग्रा० और पूर्ति 80 कि० ग्रा० होने से, जब एक विक्रेता अपनी वस्तु को पहले बेचने का प्रयास करता है तो वह कीमत थोड़ी ही कम कर—

P.T.O.

होता है और दूसरे भी ऐसा करते जाता है। जबतक कि कीमत 40 रुपये नहीं हो जाती। और पुनः माँग एवं पूर्ति में संतुलन नहीं स्थापित हो जाता है। इसे हम माँग वक्र से भी समझ सकते हैं।

तालिका 2

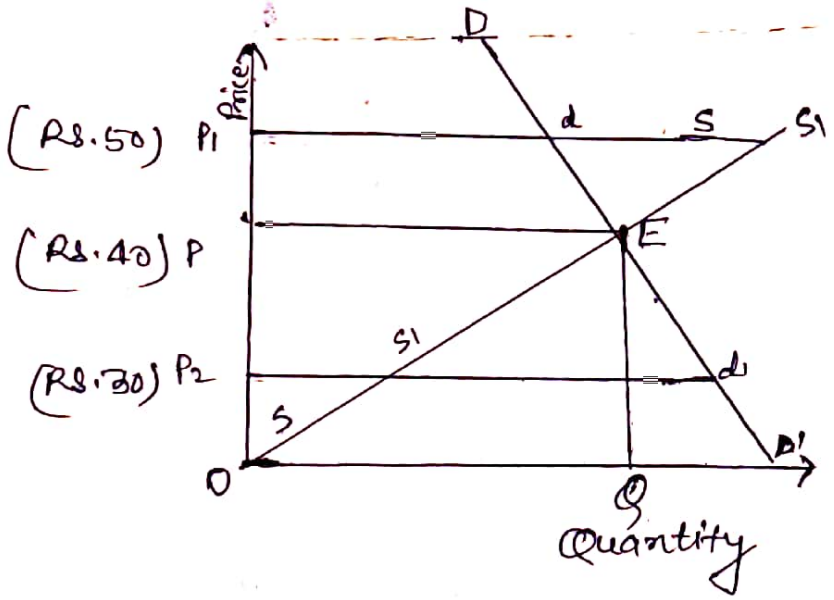




तालिका 1 में संतुलन कीमत एवं उत्पादन को दर्शाया गया है, जहाँ DD1 माँग वक्र है, और SS1 पूर्ति वक्र है, दोनों E बिन्दु पर काटते हैं जो संतुलन बिन्दु है। OP संतुलन कीमत है जो OQ संतुलन मात्रा पर बेची और खरीदी जाती है, यदि कीमत OP से कम हो कर $OP_2$ हो जाती है तो माँग $P_2d_1 >$ पूर्ति $P_2S_1$ से अधिक हो जाती है। जिससे $S_1d_1$ अतिरिक्त माँग होती है, माँग से पूर्ति अधिक होने के कारण क्रेताओं में प्रतियोगिता से कीमत OP पर आ जाती है। यदि कीमत OP से बढ़कर $OP_1$ हो जाती है तो पूर्ति $P_1S > P_1d$ (माँग), जिससे ds अतिरिक्त पूर्ति मार्केट में उत्पन्न हो जाती है अ-

P.T.O

(iii) पूँजीगत माल (Capital goods)

P.T.O.

Scanned by CamScanner

माँग होने पर विक्रेता अतिरिक्त पूर्ति को बेचने के लिए कीमत कम करते जाते हैं, जब तक कि पुनः संतुलन कीमत स्थापित नहीं हो जाती। इससे स्पष्ट होता है कि कीमत को माँग और पूर्ति द्वारा निर्धारित होती है। और जब एक बार संतुलन कीमत स्थापित हो जाती है तो उसमें विचलन होने से माँग और पूर्ति की शक्तियाँ पुनः कीमत संतुलन की स्थिति में आ जाती हैं।

Scanned by CamScanner